अमृत वेले 5 बजे। ओमशान्ति 9/5/68
आज सत गुरुवार के दिन अमृतेले याद की यात्रा में सतगुरु बाप कैसे हम बच्चों को मूलवतन का अनुभव कैसे रहे हैं वह आपको सतगुरु बाप के महावाक्य द्वारा सा. कराते हैं। :–
किसको देखते हो? कौन पढ़ाते हैं? क्या ब्रह्मा की आत्मा? ब्रह्मा की आत्मा देखती है? ब्रह्मा की आत्मा पढ़ाती है? कौन सुनता है? कौन पढ़ाते है? शिवबाबा पढ़ाते हैं यह सोच रखना चाहिए। तो पढ़ाने वाले को देखना चाहिए। आत्मा सोच करती है यह पढ़ाने वाला कौन है? क्या मनुष्य पढ़ाते हैं या आत्मा को परमात्मा पढ़ाते हैं। यह तो ज़रूर है शरीर द्वारा पढ़ाते हैं। तुम शरीर द्वारा सुनते हो; परन्तु सुनती कौन है? शरीर सुनता है य(ा) शरीर की आत्मा सुनती है? देखते हैं, कौन देखते हैं? किसको देखते हैं? बुलाते हैं हे बच्चों। कौन बुलाते हैं बच्चे किसको रेसपॉण्ड करेंगे। कौन देखते हैं? बाप कहते हैं नज़र से निहाल। अभी कौन सी नज़र? यह आँखें? अभी आत्मा को नज़र होती है ज्ञान की। यह सभी सोच करनी है। बाप पुकारेंगे ओ बेटे। तुम क्या कहेंगे ओ बाबा। बाबा बच्चों को पढ़ाते हैं, बच्चे बाबा से पढ़ते हैं। यह कोई मामा, काका, चाचा नहीं है। जिस्मानी कोई चीज़ तो नहीं है ना। शिवबाबा तुमसे पूछेंगे, तुम कौन हो? तुम क्या जबाव देंगे। अभी गुरु और सद्गुरु का अन्तर तो बच्चों को मालूम पड़ा। सद्गुरु अकाल मूर्त हो गये ना बच्चे। और तो सभी गुरु हैं। वह तो अकाल मूर्त नहीं है। और सभी मनुष्य को गुरु कहेंगे। वह तो ढेर हैं। जो किसको मत देते हैं वह गुरु हो गया; परन्तु सद्गुरु है एक तो सत्य मत देते हैं। सत्य कौन है? निराकार शिव। किसको समझाते हैं? निराकार शालीग्रामों ..... इसको कहा जाता है आत्माओं परमात्मा का मेल; क्योंकि समझाने की बात है। आत्माओं, परमात्मा का मेला जब मूलवतन में होता है वहां यह वातावरण नहीं होता। जो इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर है। इसको कहेंगे शिवबाबा पढ़ाते हैं। यह सभी का बाप है। तुम सभी मिलकर कहेंगे ओ बाबा। यह कहेंगे ओ बच्चे, ओ बेटे। यह स्मृति में रहना है। इसको कहा जाता है सुमिर–सुमिर–सुमिर सुख पाओ। फिर तुम्हारे जो भी कल–कलेश हैं जो पतित बने हो सभी मिटेंगे तन के। फिर तो यह कल–कलेश आवेंगे ही नहीं। फिर आत्मा भी होंगे शरीर भी होगा फिर तो कल–कलेश नहीं होंगे। सतयुग के मनुष्य को देवता कहा जाता है। देवताएँ ऐसे बैठते हैं। मूँझना नहीं है। यह मन्ज़िल है अभी जो बाप समझाते हैं जब तुम धंधे–धोरी में घर–घाट में जाते हो तो अनेक प्रकार के मनुष्य देखते हैं तो देख–देखकर यह समझ कम हो जाती है। यहां बाप बच्चों को कितने अक़्लमंद बनाते हैं। कौन अक़्लमंद बनाते हैं। आत्मा शरीर द्वारा। यह भी शरीर द्वारा बैठ करके सिखलाते हैं। ब्रह्मा ..... देता नहीं है यह भी अन्दर में कहते हैं बाबा। बाबा कहने से ही बहुत खुशी होनी चाहिए। बाबा से तुम विश्व का मालिक बनते हो। राज्य लेते हो कल्प–2, कितनी खुशी होनी चाहिए इस पढ़ाई में। फिर पढ़ाई कब भूली जाती है क्या। वह पढ़ाई पढ़ते हैं तो दूसरे दर्जे में ट्रांसफर होते हैं। इस पढ़ाई से नई दुनियां में जाते हैं। तुम जानते हो बाबा अमरलोक की कथा सुनाकर अमर बना रहे हैं। बाप समझातें हैं वहां काल नहीं खाते हैं। उसको अमरलोक कहा जाता है। बाबा कहते हैं तुम ऐसे (समझो) मैं आत्मा हूँ। मैं आत्मा हूँ, मैं बाबा का बच्चा हूँ। मैं कोई शरीर नहीं हूँ इस पर नाम पड़ता है। मैं तो शिवबाबा का बच्चा हूँ। अभी बाबा से वर्सा लेते हैं। यह भक्तिमार्ग नहीं है। एक है बाप सभी आत्माओं का। यहां एक बाप मिलता है जिसको पहचानते हैं। आगे नहीं जानते थे। कुत्ता–बिल्ला सभी में समझते थे। इतने बेसमझ बन गये थे। भक्तिमार्ग में सभी राज–भाग गंवा दिया जैसे मैड चेप्स बन गये। अभी छी–छी से गुल–2 बन रहे हो। हम फूल थे ड्रामा अनुसार कांटे बन गये। फूल से कैसे कांटे बनते हो समझ होनी चाहिए। अभी संगम पर बैठे हो फिर अपने देश में जाते हो। संगदोष में क्या–2 कर बैठते हैं। अच्छा, आज चक्र की ड्रिल यहां ही पूरी करते हैं। अच्छी तरह से समझना है, समझाना है, धारण करना है। यहां बैठे हो लाइट हाउस बन बैठते हो। घर को जान गये, राजधानी को जान गये। यह तो पराई राजधानी में आकर पड़े हो। अच्छा, बच्चों को गुड मॉर्निंग और नमस्ते।

–: :ओमशान्तिः :–